दैनिक जागरण
www.dainikjagranmpcg.com
भोपाल, 10 मई 2025

सत्यकथा

ग्वालियर : बलात्कार के आरोपी फरार तहसीलदार पर 5 हजार का इनाम

15 जनवरी की शाम ग्वालियर के पड़ाव इलाके में स्थित महिला थाने का माहौल काफी गहमा गहमी भरा था। थाना प्रभारी दीप्ति तोमर अपने कमरे में एक महिला के साथ बैठी महिला अपराध डीएसपी किरण अहिरवार के थाने आने का इंतजार कर रही थी।

थोड़ी देर में डीएसपी किरण अहिरवार थाने पहुंची तो कोई एक दो घंटे की पूछताछ के बाद आखिर शाम से ही थाने में धरना दिए बैठी 34 वर्षीय महिला रीना (बदला नाम) की रिपोर्ट पर भितरवार में पदस्थ तहसील शत्रुघन सिंह तोमर के खिलाफ बीएनएस की विभिन्न धाराओं के अंतर्गत बलात्कार एवं धोखाधड़ी का मामला दर्ज कर लिया गया।

इस मामले में एफआईआर भले की 15 जनवरी की रात कोई 12 बजे लिखी गई हो लेकिन इस मामले की सुगबुगाहट तो कोई 15 दिन पहले से ही चल रही थी जब रीना ने आरोपी पर 17 साल तब

राजपत्रित अधिकारी पर लगा बलात्कार का आरोप

शादी के धोखे में रखकर अलग-अलग शहरों में साथ रखकर बलात्कार करने का आरोप लगाया था। रीना के आवेदन के साथ ही मामला चर्चा में आने पर कलेक्टर ग्वालियर ने शत्रुघन सिंह चौहान का तबादला भितरवार से कलेक्टर मुख्यालय में कर दिया था।

जाहिर सी बात है कि ऐसा तो हो नहीं सकता कि ग्वालियर के सिटी सेंटर में पदस्थ तहसीलदार के खिलाफ ग्वालियर के ही महिला थाने में बलात्कार जैसे गंभीर आरोप में एफआईदर्ज हो और खुद आरोपी तहसीलदार को इसकी जानकारी भी न लगे। इसलिए एफआईआर दर्ज होने की जानकारी लगते ही तहसीलदार शत्रुघन सिंह तोमर के भूमिगत हो जाने ने उनकी गिरफ्तारी भले ही न हो सकी हो लेकिन एक राजपत्रित अधिकारी के खिलाफ इस तरह का मामला दर्ज होते ही प्रदेश भर में इसकी चर्चा आम हो गई।

आरोपी तहसीलदार तथा पीड़ित महिला।

कहते हैं कि बात निकलेगी तो दूर तलक जाएगी, यही इस मामले में हुआ यह मामला दर्ज हुआ तो तहसीलदार साहिब की आपराधिक कुंडली अखबारों में चर्चा का विषय बन गई। जिसके अनुसार 2008 में पटवारी से प्रोमोशन पाकर नयाब तहसीलदार के पद पर नियुक्ति ने पहले मध्यप्रदेश के भिंड और उत्तरप्रदेश के इटावा जिले में

बलात्कार का आरोप लगाए जाने से पहले आरोपी तहसीलदार शत्रुघन सिंह चौहान पर 16 आपराधिक मामले दर्ज हैं जिनमें से 7 मामलों में तहसीलदार साहिब पर हत्या, हत्या के प्रयास के अलावा लूट और डकैती जैसे गंभीर अपराध के मामले दर्ज हैं। इतना ही नहीं आरोपी तहसीलदार पर यौन शोषण का यह पहला आरोप नहीं है। इससे पहले भी उनकी अधीनस्थ महिला कर्मचारी ने तहसीलदार पर यौन शोषण का आरोप लगाया था।

आरोपी तहसीलदार।

इनामी तहसीलदार

पीड़ित महिला का आरोप है कि 2008 से पहले पटवारी के पद पर काम करते हुए शत्रुघन सिंह भिंड जिले का चर्चित रेप माफिया रह चुका है।

सरकार 5, मैं 50 हजार दूंगी

पीड़िता का कहना है कि पुलिस विभाग ने आरोपी की गिरफ्तारी पर 5 हजार का इनाम घोषित किया है लेकिन मैं आरोपी की गिरफ्तारी में मदद करने वाले को 50 हजार रुपया दूंगी चाहे इसके लिए मुझे अपना मकान ही क्यों न बेचना पड़े।

तहसीलदार चौहान के ऊपर दर्ज कुल जमा 16 मामले जिनमें हत्या, हत्या के प्रयास और लूट तथा डकैती जैसे मामले भी शामिल हैं, सामने आ गए।

जिस व्यक्ति के खिलाफ 16 गंभीर मामले अदालत में लंबित हो और वह रुतबेदार पद पर काबिज भी हो तो ऐसे व्यक्ति के खिलाफ न्याय की आवाज उठाने वाली अकेली महिला का भयभीत होना लाजिमी है। इसलिए आरोपी के फरार हो जाने के बाद रीना ने पुलिस के उच्चाधिकारियों से मिलकर आरोपी को शीघ्र गिरफ्तार किए जाने की मांग की।

इसी बीच आरोपी तहसीलदार ने जिला कोर्ट में जमानत के लिए अर्जी दाखिल कर दी। लेकिन उनके पुराने आपराधिक रिकार्ड को देखते हुए पहले जिला अदालत और फिर हाईकोर्ट के बाद सुप्रीम कोर्ट ने भी उन्हें जमानत देने से इंकार कर दिया।

इस सबके बीच चार महीने का समय बीत चुका है। ग्वालियर एसपी धरमवीर सिंह आरोपी की गिरफ्तारी पर 5 हजार रुपए का इनाम भी घोषित कर चुके हैं लेकिन आरोपी तहसीलदार कहां छुपे हैं इसकी जानकारी पुलिस को अब तक नहीं लग सकी है। हां इस दौरान पीड़िता ने 17 सालों तक अपने शोषण की जो कहानी बताई वह जरूर चर्चा में है। रीना की उम्र 34 साल है और उसने 17 सालों से अपने शोषण की बात कही है। इस नजरिए से देखे तो 17 साल पहले जब आरोपी तहसीलदार ने पहली बार 10 अगस्त 2008 को रीना के साथ शारीरिक रिश्ता कायम किया तब रीना की उम्र 17 साल थी।

रीना के अनुसार उसकी शादी 2006 में भिंड के एक गांव मानगढ़ में हुई थी। लेकिन दुर्भाग्य से उसके पति की दो साल बाद ही बीमारी के चलते मृत्यु हो जाने से वह विधवा हो गई। लगातार...

...पृष्ठ 1 से जारी

ग्वालियर का बहुचर्चित मामला

पीड़ित युवती का कहना है कि आरोपी ने 2010 में रतनगढ़ माता मंदिर में मेरे साथ विवाह किया था। इसके बाद उन्होंने लगातार 15 वर्षों तक मुझे अलग-अलग शहरों में बतौर पत्नी बनाकर साथ रखा। पीड़ित युवती का यह भी आरोप है कि उसके अलावा आरोपी तहसीलदार शत्रुघन सिंह चौहान की तीन पत्नियां और भी है। पुलिस इस आरोप की भी जांच कर रही है।

आरोपी तहसीलदार शत्रुघन सिंह।

रीना के जेठ रेत का कारोबार करते थे इस नाते रीना के अनुसार उस समय आरोपी शत्रुघन सिंह भिंड का बड़ा रेत माफिया था। इसलिए एक ही धंधे में होने के कारण शत्रुघन सिंह की दोस्ती रीना के जेठ थी जिससे उसका रीना के घर आना-जाना था।

जिसके चलते 17 साल की विधवा रीना पर उसका दिल आ गया। रीना ने बताया कि इसके बाद योजना बनाकर शत्रुघन ने मेरे जेठ के व्यापार में काफी लाभ पहुंचाकर उनके सामने मेरे साथ शादी का प्रस्ताव रखा।

इसके बाद 10 अगस्त 2008 को शत्रुघन सिंह ने मौका पाकर मेरे साथ प्यार का इजहार कर मेरे संग संबंध बनाए। संयोग से इस संबंध के कुछ दिन बाद ही उसकी नियुक्ति नयाब तहसीलदार के तौर पर हो जाने से उसका कहना था कि मेरा प्यार उसके लिए किस्मत के दरवाजे खोलने वाला साबित हुआ है इसलिए वह मेरे साथ शादी करेगा। और इसी वादे के साथ वह मेरे साथ बार-बार संबंध बनाने लगा। इस पर जब मैंने उससे शादी करने को कहा तो 2010 में वह मुझे रतनगढ़ मंदिर ले गया जहां देवी के सामने मेरी मांग में सिंदूर भरकर मेरे साथ शादी करने का नाटक किया।

रीना ने बताया कि तबसे अब तक आरोपी का जहां भी तबादला हुआ वह हमेशा मुझे अपने साथ उसी शहर में ले जाकर रखने लगा और इस दौरान वह लगातार मेरे साथ संबंध बनाता रहा। जिसके चलते 2014 में मैंने उसके बेटे को जन्म दिया।

demo pic.

रीना ने बताया कि पिछले साल के अंत तक सब कुछ ठीक चलता रहा। यह हर शहर में मुझे साथ रखते थे और पूरा खर्च भी उठाते थे। मैं खुद को आरोपी की पत्नी समझती रही। लेकिन इसी दौरान मुझे मालूम चला कि शत्रुघन की तीन पत्नियां है जिनमें मेरा नाम कहीं नहीं है। इसलिए जब मैंने इस बारे में बात की तो यह मेरे साथ मारपीट कर सारे गहने जेवर लेकर चला गया और मुझे खर्च के लिए पैसे देना भी बंद कर दिया। इसलिए परेशान होकर मैंने पुलिस का सहारा लिया लेकिन पहले मेरी नहीं सुनी गई और अब सुनी गई तो आरोपी को गिरफ्तार करने में लापरवाही की जा रही है। जबकि पुलिस जानती है कि शत्रुघन सिंह का पुराना आपराधिक रिकार्ड है जिसके चलते वह मुझे और मेरे बेटे का नुकसान पहुंचा सकता है जिसकी धमकियां भी दी जा रही हैं। इस मामले में एसपी ग्वालियर का कहना है कि आरोपी की तलाश की जा रही है जिसे जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

कथा पुलिस सूत्रों पर आधाति।

तीन दिन में करवा लिया बैतूल का तबादला

जानकारी अनुसार आरोपी तहसीलदार ने भितरवार से हटाए जाने के बाद भू-राजस्व कार्यालय में ज्वाइन किए बिना ही तीन दिन में अपना तबादला बैतूल तहसीलदार के पद पर करवा लिया। इसकी जानकारी भी ग्वालियर पुलिस को नहीं दी गई। लेकिन फिलहाल बैतूल कलेक्टर ने उन्हें निलंबित कर दिया है।

पहले भी एक महिला कर्मचारी ने लगाया था आरोप

बलात्कार के आरोपी शत्रुघन सिंह पर यौन शोषण का यह पहला आरोप नहीं है। इससे पहले भी जब वह सिटी सेंटर तहसीलदार थे तब एक महिला कर्मचारी ने उनके ऊपर ऐसा ही आरोप लगाया था। तब उनका तबादला भितरवार कर दिया गया था। यौन शोषण का दूसरी बार आरोप लगते ही कलेक्टर ने शत्रुघन सिंह चौहान को भितरवार तहसीलदार पद से हटाकर भू-राजस्व कार्यालय में पदस्थ कर दिया है।

जाते-जाते कर गए खेल?

विवादों से घिरे सिटी सेंटर क्षेत्र के तत्कालीन तहसीलदार शत्रुघन सिंह के कारनामे एक के बाद एक सामने आ रहे हैं। एक महिला से यौन उत्पीडन की शिकायत पर नपने से पहले वे नौगांव क्षेत्र की लगभग चालीस करोड़ रुपए की शासकीय भूमि को निजी कर गए। यह भूमि शिवपुरी लिंक रोड पर टोयटा शोरूम के पास है जहां एक बीघा जमीन की कीमत दो से तीन करोड़ रुपए से कम नहीं है। जानकारी के मुताबिक महिला उत्पीडन की शिकायत पर जिलाधीश रुचिका चौहान ने शत्रुघन सिंह चौहान को छह अप्रैल को पद से हटाकर कलेक्ट्रेट में अटैच कर दिया लेकिन इसके ठीक दो दिन पहले उन्होंने एक ऐसी जमीन को निजी घोषित कर दिया जिसे लेकर पहले ही कई वाले खारिज किए जा चुके थे। इस मामले में सच्चाई की विस्तृत जांच अभी की जा रही है।

सब झूठ है महिला मुझे दस लाख मांग रही थी

इस मामले में फरार आरोपी तहसीलदार शत्रुघन सिंह ने महिला पर हनी ट्रैप का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि महिला ने उनसे 10 लाख रुपए की मांग की थी, जिसमें से 1 लाख रुपये पहले ही

आरोपी शत्रुघन सिंह ।

ले लिए गए थे। जब उन्होंने यह राशि वापस मांगी तो उन पर दबाव डाला गया और मामले में फंसाने की धमकी दी गई। इस बात की शिकायत मैंने महीने भर पहले एसपी कार्यालय में की थी। उन्होंने पूरे मामले को अपने खिलाफ साजिश बताया है।

धरमवीर सिंह, एसपी

बेटे के अधार कार्ड में पिता का नाम शत्रुघन सिंह, डीएनए करवाने तैयार

रीना ने सबूत के तौर पर पुलिस के सामने बेटे और अपना आधार कार्ड पेश किया है। इसके साथ ही बेटे का बर्थ सर्टिफिकेट पेश किया है। बेटे के आधार कार्ड में पिता का नाम शत्रुघन सिंह चौहान लिखा है, वहीं उसके पति के नाम पर भी तहसीलदार का नाम लिखा है। रीना का कहना है कि वह बेटे का डीएनए टेस्ट करवाने तैयार है जिससे यह साफ हो जाएगा कि मेरा बेटा शत्रुघन सिंह से ही है।

सुप्रीम कोर्ट से भी नही मिली राहत

इस मामले में फरार तहसीलदार को उनका पुराना आपराधिक रिकार्ड देखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने भी जमानत देने से इंकार कर दिया। सबसे पहले जिला अदालत ने आरोपी तहसीलदार शत्रुघन सिंह चौहान की अग्रिम जमानत याचिका खारिज की थी। इसके बाद हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट से भी उन्हें राहत नहीं मिली।

दीप्ति चौहान, टीआई

व्यापक स्तर पर संबंधित लोगों से पूछताछ की जाएगी

डीएसपी महिला अपराध किरण अहिरवार का कहना है कि मामले की सच्चाई जानने के लिए व्यापक स्तर पर लोगों से पूछताछ की जाएगी। पीड़िता द्वारा लगाए गए आरोपों की सच्चाई परखने के लिए उन सभी लोगों से जानकारी ली जाएगी जिनके नामों का जिक्र पीड़िता ने अपने बयानों में किया है। इनमें अलग-अलग शहरों में जहां आरोपी तहसीलदार रहे हैं वहां के मकान मालिक एवं आरोपी के चपरासी और नौकरों से पूछताछ की जाएगी।

डबरा

लेस्बियन सहेली को साथ रखने के लिए पत्नी ने अपने पति को दिया अनोखा ऑफर

वो दिन लद गए जब एक स्त्री, वजन बराबर सोना देने पर भी सौत स्वीकार नहीं करती थी। लेकिन डबरा में एक पत्नी ने अपनी लेस्बियन पार्टनर को साथ रखने के लिए पति को अपनी सहेली के साथ संबंध बनाने का खुला न्यौता दिया, शर्त के मुताबिक पत्नी की लेस्बियन सहेली, पति की पत्नी और पत्नी का पति बनकर साथ रहेगी।

demo pic.

तेरी पत्नी मेरा पति

1 अप्रैल की शाम का वक्त था जब ग्वालियर जिले के डबरा सिटी थाना प्रभारी यशवंत गोयल के सामने उनके थाना इलाके में रहने वाले एक युवक ने दो बच्चों के साथ अपनी पत्नी सोना के लापता हो जाने की जानकारी दी। ऐसी घटनाओं में ज्यादा संभावना पति-पत्नी के बीच पारिवारिक विवाद अथवा मारपीट का होता है।

लेकिन दूसरे दिन सुबह इस मामले में एक नया मोड़ उस वक्त आते दिखाई दिया जब इसी महिला के पड़ोस में रहने वाले एक अन्य परिवार ने आकर अपनी 23 साल की जवान बेटी मोना के घर से लापता होने की बात बताई। एक ही कालोनी में एक दूसरे के पड़ोस में रहने वाले दो परिवार से एक ही दिन और एक ही समय में सोना नाम की 28 वर्षीया विवाहिता और मोना (दोनों बदले नाम)नाम की 23 साल की अविवाहित युवती गायब थी। ऐसा संयोग सामान्य नहीं है इसलिए पुलिस ने दोनों ही परिवार से पूछताछ की जिसमें पता चला कि सोना और मोना की आपस में बहुत अच्छी दोस्ती ही नहीं थी बल्कि वे दोनों अपना ज्यादा समय एक दूसरे के साथ बिताती थी। इससे पुलिस ने अनुमान लगाया कि मोना और सोना दोनों जहां भी है एक साथ ही होगी।

पुलिस थाने में एक-दूसरे से मिलकर सलाह करती लेस्बियन पार्टनर।

धीरे-धीरे 8 दिन बीत गए लेकिन सोना, मोना को कोई पता नहीं चला। लेकिन 9 वें दिन अचानक मोना का मोबाइल कुछ देर के लिए ऑन हुआ जिसमें उसकी लोकेशन जयपुर की मिलने पर पुलिस की एक टीम जयपुर रवाना हो गई। जयपुर में स्थानीय पुलिस की मदद से पुलिस उस कालोनी में जांच शुरू की जहां मोना के मोबाइल की लोकेशन मिली थी। इसमें लोगों से पूछताछ की कालोनी में रहने के लिए आई दो लड़कियों के बारे में जानकारी जुटाई जाने लगी। जिसमें पुलिस को पता चला कि दो लड़कियां तो नहीं लेकिन एक पति-पत्नी जरूर 2 अप्रैल को यहां एक मकान में किरायेदार के रुप में रहने आए हैं उनके दो बच्चे भी हैं।

पति-पत्नी की बात सुनकर पुलिस निराश हो गई लेकिन फिर भी एक बार इस नए परिवार की जानकारी जुटाने जब पुलिस उस मकान पर पहुंची तो वहां बाहर खेल रहे बच्चों को देखते की सोना के पति ने पहचान लिया कि ये उसके बच्चे हैं। बच्चे भी अपने पिता को देखते ही दौड़कर उनके पास आकर गले से लग गए।

यह देखकर पुलिस ने राहत की सांस ली। सोना की गुमशुदगी का मामला हल हो चुका था। पूछताछ में पुलिस ने जब सोना से उसके साथ रहने वाले युवक के बारे में पूछा तो सोना ने बताया कि वो सुबह से काम की तलाश में गए हैं 12 बजे तक आने का बोल गए थे।

12 बजने में ज्यादा समय नहीं था इसलिए सोना के पति के साथ पुलिस उसके ही घर में बैठकर युवक के आने का इंतजार करने लगी जिसके साथ सोना भागकर आई थी। लेकिन थोड़ी देर बाद जब सोना का प्रेमी घर आया तो उसे देखते ही सोना का पति बोला अरे यह तो मोना है। मोना लड़कों के कपड़े पहनकर सोना का पति बनकर जयपुर में रह रही थी और यह बात इनके मकान मालिक को भी नहीं मालूम थी कि दोनों पति-पत्नी लड़की हैं। दतिया थाने में आकर सोना और मोना दोनों ने ही अपने अपने परिवार में वापस जाने से मना कर दिया। उनका कहना था कि वो दोनों आपस में एक दूसरे को प्यार करती है और जीवन भर पति-पत्नी बनकर साथ रहेंगी।

पुलिस और परिवार ने दोनों को समझाने की काफी कोशिश की मगर वे अपनी जिद पर अड़ी रही। लेकिन जब सोना का पति भी उसे छोड़ने राजी नहीं हुआ तो सोना और मोना ने अकेले में एक दूसरे से बात करने की बात कही जिस पर पुलिस ने उन्हें थाने में एक तरह खड़े होकर बात करने की अनुमति दे दी। इस पर दोनों प्रेमी युवतियां काफी देर तक धीरे-धीरे बातें करती रहीं इसके बाद सोना ने वापस आकर पति के सामने जा शर्त रखी उसे सुनकर सब चौंक गए। सोना ने कहा कि ठीक है वो घर वापस जाने राजी है लेकिन उसकी शर्त है कि मेरे साथ मोना को भी मेरे पति को स्वीकार करना पड़ेगा।

सोना की बात सुनकर पति भड़क गया तो सोना बोली कि हम दोनों लिखकर देने तैयार है कि हमारा रिश्ता तुम्हारे अधिकारों में कोई कमी नहीं आने देगा। रात के समय मैं तुम्हारी पत्नी रहूंगी और दिन में तुम्हारे काम पर जाने के बाद मोना मेरा पति होगी। और हां तुम चाहो तो मोना को भी पत्नी की तरह प्यार कर सकते हो।

पत्नी की ऐसी वेशर्मी की बातें सुनकर सोना का पति आपा खो बैठा। उसने इस तरह की कोई भी शर्त मानने से इंकार कर दिया। इस पर पूरे दिन विवाद चलता रहा। इस बीच सोना के मायके वाले भी थाने आ गए जिन्होंने अपनी बेटी को समझाने का प्रयास किया जिससे अंततः सोना बच्चों को लेकर घर वापस जाने तैयार हो गई। सोना का यह फैसला सुनते की मोना थाने की दीवाल से सिर मारकर रोने लगी जिसे बड़ी मुश्किल से सोना ने ही समझाया। जिसके बाद पुलिस ने सोना और मोना को उनके परिवारों के साथ भेज दिया। जिसके बाद यह कहानी इस प्रकार सामने आई।

सोना के पति के साथ चले जाने पर दीवार से सिर मारती मोना।

इसको भी पत्नी बनाकर साथ रख लो

थाने में लेस्बियन युगल को समझाते परिजन।

मोना और सोना पकड़े जाने के बाद भी एक दूसरे से अलग होने राजी नहीं थी। सोना ने पति को ऑफर दिया था कि वो मोना को भी पत्नी बनाकर घर में रख ले। उसने पति को यह छूट भी देने की बात कही थी कि वो मोना को पति की तरह प्यार भी कर सकता है। लेकिन सोना का पति राजी नहीं हुआ। इसके बाद जब घर वालों के दबाव में सोना पति के साथ जाने राजी हो गई तो यह जानकार मोना से थाने की दीवाल से अपना सिर तोड़ने की भी कोशिश की।

मकान मालिक को नहीं मालूम था सच

सोना अपने साथ दोनों बच्चों को ले गई थी। इसलिए जयपुर में मकान मालिक को भी नहीं मालूम था कि पति-पत्नी दोनों लड़की है। उसके सामने तो यह राज उस वक्त खुला जब सोना का पति पुलिस लेकर जयपुर पहुंचा।

मोना का बचपन से पड़ोस के घर में काफी आना जाना था। इसलिए जब सोना इस घर में ब्याह का आई तभी से मोना की की अपनी इस भाभी से काफी अच्छी दोस्ती हो गई थी क्योंकि सोना की अपनी कोई ननद थी नहीं और मोना के साथ उसकी उम्र में ज्यादा अंतर था भी नहीं। धीरे-धीरे दोनों की दोस्ती गहराती गई जिससे उनका ज्यादा वक्त साथ बीतने लगा। इसी दौरान मोना की उम्र शादी के लायक हुई तो उसके घर वालों ने उसके लिए लड़के की तलाश शुरू कर दी। लेकिन मोना ने साफ मना कर दिया कि वह शादी नहीं करना चाहती। शुरू में तो घर वालों ने मोना की बात को गंभीरता से नहीं लिया लेकिन जब उसने एक के बाद एक कई रिश्ते ठुकरा दिए यहां तक उसने लड़के वालों के परिवार में भी फोन कर शादी करने से इंकार करना शुरू कर दिया तो घर वालों को चिंता होने लगी।

जांच अधिकारी

इसी बीच एक रोज मोना की मां ने सोना से मोना को समझाने के लिए कहा ताकि वो शादी करने राजी हो जाए। इस पर सोना ने मोना से बात की तो मोना ने साफ कह दिया कि उसे लड़कों में जरा भी इंट्रेस्ट नहीं। अगर उसे शादी करना ही पड़ी तो किसी लड़की से करेगी। शेष पृष्ठ 7 पर...

शिवपुरी

एक के बाद परिवार की दूसरी महिला पर नजर डालने से नाराज युवक ने की दोस्त की हत्या

जिद्दी आशिक

इस्लाम शाह

किसी भी लड़की को चंद दिनों में अपने सांचे में उतार लेने की कला का जानकार राहुल खुद को ऐसा जिद्दी आशिक मानने लगा था जो किसी भी हसीना का दिल चुटकी बजाते जीत सकने की कूबत रखता है।

demo pic.

दिन चढ़ने पर पुरानी शिवपुरी की जवाहर कालोनी में रहने वाले विकास चौधरी की नींद 28 अप्रैल की सुबह दादी द्वारा झकझोरने पर टूट गई।

क्या है दादी सुबह-सुबह काहे को चिल्ला रही हो। कच्ची नींद टूटने से विकास झल्लाकर बोला।

और क्या बुढ़ापे में यही तो एक काम रह गया मेरा, चिल्ला-चोंट मचाना। मालूम नहीं भगवान कौन से कर्मों की सजा दे रहा है, उठाता भी तो नहीं मुझे, उठे ले तो पाप कटे।

अरे वो डरता है तुमसे दादी तुम्हें न उठाएगा। अब बोलो क्या हुआ?

हुआ क्या, राहुल रात भर से वापस नहीं लौटा है। देखो उस डायन के घर तो नहीं पड़ा जिसने मेरे हीरे से बेटे को अपने पल्लू से बांध लिया है। कैसी औरत है छह हाथ का खसम घर में है फिर भी दूसरे लड़कों को लिए घूमती है।

अमन सिंह राठौड़, एसपी

अब बस भी करो, वो तो कब की गांव चली गई अपने तुम अपने लाड़ले को क्यों नहीं समझाती की यह बात अच्छी नहीं है।

कब से कह रही हूं कि उसकी शादी करा दो। लेकिन तुम लोग सुनते कहां हो।

इसका मतलब तो यह है कि जिसकी शादी नहीं हुई वो सभी ऐसा करते हैं क्या?

अब मुंहजोरी न करो। जाओ देखो उसे कहा है। रात में तो कह रहा था कि 11 बजे तक वापस आ जाएगा। कहते हुए दादी ने विकास को धक्का देते हुए बिस्तर से उठाया तो वह हाथ-मुंह धोकर छोटे भाई राहुल की तलाश में निकलने से पहले एक बार फिर उसके मोबाइल पर घंटी करने की कोशिश की लेकिन वह पहले की तरह अब भी बंद था।

शिवपुरी के जवाहर मोहल्ले में रहने वाला राहुल चौधरी पेशे से राजमिस्त्री था। पड़ोस में रहने वाली एक विवाहित महिला सपना (बदला नाम) के साथ उसके अवैध संबंध पूरे मोहल्ले में चर्चा का विषय ही नहीं रह चुके थे बल्कि इस बात को लेकर कुछ रोज पहले सपना के पति और राहुल के बीच गहरा विवाद भी हुआ था। जिसके बाद सपना का पति तो अब भी पड़ोसी था लेकिन उसने सपना को उसके मायके भेज दिया था।

राहुल की तबियत दो तीन दिन से ठीक न होने के कारण वह काम पर नहीं जा रहा था। लेकिन कल 27 अप्रैल की शाम लगभग 5 बजे वह पड़ोस में ही जहां मकान निर्माण का काम कर रहा था, के मालिक से पैसों का हिसाब करने का कहकर घर से निकला था।

इसके बाद रात 8 बजे उसने खुद अपनी दादी के मोबाइल पर फोन कर रात में 11 बजे तक घर वापस आने की बात कही थी।

राहुल काम से निकला है इसलिए कह रहा है तो 11-12 बजे तक आ जाएगा ऐसा सोचकर परिवार के बाकी लोग सो गए।

राहुल रात घर नहीं लौटा इसकी जानकारी सबसे पहले दादी को सुबह जागने पर हुई जिसके बाद बाकी लोगों तक पहुंची।

इधर घर से निकलकर भाई विकास ने उसके दोस्तों से संपर्क किया लेकिन कुछ जानकारी नहीं लगी। इस दौरान वह पड़ोस में रहने वाले रविन्द्र उर्फ बिट्टू परिहार के पास भी गया। रविन्द्र, राहुल का दोस्त तो था ही साथ ही साथ राहुल इन दिनों रविन्द्र के बन रहे घर में ही काम कर रहा था।

रविन्द्र ने विकास को बताया कि राहुल आया तो था लेकिन पैसे का हिसाब करने के बाद चला गया था। विकास ने सभी दोस्तों से पूछताछ की मगर भाई का पता नहीं चला तो फिर आखिरी में उसने सपना को फोन कर राहुल के बारे में पूछा। इस पर सपना ने बताया कि वो उसके पास तो नहीं आया लेकिन रात में उसने फोन पर बताया था कि वो रविन्द्र भैया के साथ उनकी ससुराल जा रहे हैं।

सपना की बात सुनकर राहुल चौक गया क्योंकि वो कुछ ही देर पहले रविन्द्र से मिला था तब रविन्द्र ने ऐसा कुछ उसे नहीं बताया था। संयोग से इसी बीच मोहल्ले के एक आदमी ने जब विकास को राहुल को खोजते हुए देखा तो उसने बताया कि राहुल को उसने कल शाम को रविन्द्र और योगेन्द्र उर्फ छोटू के साथ रविन्द्र की कार में बैठकर कहीं जाते देखा था।

विकास की कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि अगर राहुल, रविन्द्र के साथ था तो वह इससे मना क्यों कर रहा है। इसलिए सच जानने के लिए वह योगन्द्र के पास पहुंचा जिस पर योगेन्द्र ने बताया कि कल राहुल तो उसे मिला ही नहीं।

यहां विकास अपनी भाई की तलाश में भटक रहा था वहीं दूसरी तरह देहात थाना प्रभारी रत्नेश सिंह को कोटा-झांसी हाइवे पर सुकवाया गांव के पास एम पुलिया के नीचे किसी युवक का अधजला शव मिलने की खबर मिली। खबर पाकर थाना प्रभारी ने मौके पर पहुंचकर शव बरामद कर आसपास के इलाके की बारीकी से जांच करने के बाद इसकी जानकारी एसपी अमन सिंह राठौड़ को देकर शव मर्चुरी में रखवा दिया क्योंकि शव को जिस तरह से जलाने की कोशिश की गई थी उससे शव की पहचान नहीं हो सकी।

दूसरी तरह दिन भर भटकने के बाद भी जब राहुल के बारे में कोई जानकारी नहीं मिली और न उसका मोबाइल ऑन हुआ तो शाम के समय विकास अपने भाई की गुमशुदगी दर्ज करवाने थाने पहुंच गया। संयोग से अब तक सभी थानों में अज्ञात लाश मिलने की खबर पहुंच चुकी थी इसलिए पुलिस उसे शव की पहचान करने के लिए मर्चुरी ले गई जहां शव देखते ही विकास ने उसकी पहचान अपने भाई राहुल के तौर पर कर दी।

बीयर पिलाकर चाकू से गोदा फिर पत्थर से कुचला

मृतक राहुल चौधरी

पुलिस के अनुसार आरोपी योजना अनुसार मृतक को अपने साथ सुजवाया गांव ले गए जहां पार्टी के नाम पर खुद कम नशा किया मगर मृतक को बीयर की चार केन पिला दी। इससे जब मृतक पर नशा छा गया तो दोनों आरोपियों ने उसे चाकू से गोद कर उसके सिर पर भारी पत्थर पटक कर हत्या कर दी।

राहुल के साथ रविन्द्र की मुंहबोली बहन की आशिकी उसका घर तोड़ने के मुकाम पर आ पहुंची थी। इसलिए रविन्द्र चाहता था कि राहुल उसकी बहन के साथ अपने संबंध खत्म कर ले। लेकिन राहुल ने जब रविन्द्र की बात पर ध्यान नहीं दिया तो...

शव की पहचान होने पर पुलिस ने शव को पीएम के लिए भेज कर विकास से पूछताछ की जिसमें विकास ने एक दिन पहले शाम 5 बजे राहुल के घर से निकलने से लेकर मर्चुरी तक पहुंचने की पूरी कहानी सुना दी। इतना ही नहीं राहुल के परिवार वालों ने इस मामले में सपना के पति पर राहुल की हत्या का शक जाहिर किया। साथ ही वह सब भी बता दिया जो सपना ने उसे फोन पर बताया था कि राहुल, रविन्द्र के साथ उसकी ससुराल जा रहा था। एक अन्य आदमी द्वारा भी राहुल को रविन्द्र और योगेन्द्र के साथ देखे जाने की बात पता चलने की बात भी उसने पुलिस को बता दी।

रत्नेश सिंह यादव टीआई, देहात थाना

शार्ट पीएम रिपोर्ट में धारदार हथियार से शरीर पर घाव के निशान और किसी भारी चीज से सिर कुचले जाने की बात सामने आने पर पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर लिया। साथ ही एसपी शिवपुरी अमन सिंह राठौड़ ने देहात थाना प्रभारी टीआई रत्नेश सिंह के नेतृत्व में एसआई जेबी सिंह वैश, प्रियंका शुक्ला, धर्मेन्द्र जाट, एएसआई विनोद सिंह गुर्जर, प्रधानआरक्षक दीपचंद्र, विनय कुमार सिंह, भगवत प्रसाद, देवेन्द्र सेन, सुनील भार्गव, मोहन सिंह चौहान, सुरेन्द्र दुबे, राजेन्द्र शर्मा तथा आरक्षक बदन सिंह, दिनेश सिंह, सचेन्द्र शर्मा, शकील खान, पुष्पेन्द्र रावत, राघवेन्द्र रावत, मिथुन कुशवाह, ऋषभ करारे, रणवीर शर्मा, मनोज गौड़, नारायण शर्मा, राघवेन्द्र सिंह, महिला आरक्षक गायत्री मुदगल, शिल्पी गुप्ता आदि की एक टीम इस मामले की जांच के लिए गठित करते हुए आरोपियों की गिरफ्तारी पर दस हजार रुपए का ईनाम भी घोषित कर दिया।

पुलिस ने सबसे पहले आखिरी बार साथ देखे जाने के आधार पर रविन्द्र उर्फ बिट्टू एवं योगेन्द्र उर्फ छोटू को पूछताछ के लिए थाने बुलाया। जिसमें रविन्द्र ने बताया कि मकान निमार्ण की मजदूरी का हिसाब करने राहुल शाम को उसके पास आया था लेकिन तबियत खराब होने की बात कहकर वह जल्द वापस चला गया था। जिसमें बाद में और योगेन्द्र दोनों एक शादी समारोह में शामिल होने चले गए थे।

पुलिस को रविन्द्र की बात पर भरोसा नहीं था इसलिए रविन्द्र और योगेन्द्र दोनों के मोबाइल की लोकेशन और काल डिटेल निकाली जिसमें पता चला कि इन दोनों का मोबाइल कल शाम को राहुल के मोबाइल के साथ उस लोकेशन पर था जहां दूसरे दिन उसका अधजला शव मिला था।

जाहिर था कि रविन्द्र और योगेन्द्र बीती रात राहुल के साथ उसी जगह मौजूद थे जहां उसकी लाश मिली थी। इसलिए पुलिस ने बिना देरी किए दोनों के साथ सख्ती से पूछताछ की तो थोड़ी ही देर में आरोपियों के टूट जाने पर पुलिस ने 24 घंटे में ही इस हत्याकांड का खुलासा करते हुए आरोपियों के पास से हत्या में प्रयुक्त रविन्द्र की कार, चाकू, आरोपियों के खून सने अधजले कपड़े, मृतक का टूटा मोबाइल आदि बरामद कर लिया। जिसके बाद राहुल की इश्क बाजी की आदत में हुई हत्या की कहानी इस प्रकार सामने आई।

मृतक राहुल चौधरी और दोनों आरोपी रविन्द्र तथा योगेन्द्र पुरानी शिवपुरी की एक ही बस्ती के रहने वाले हैं। हम उम्र भी है इसलिए तीनों के बीच किशोर उम्र से ही अच्छी दोस्ती चली आ रही है। रविन्द्र हवाई पट्टी के सामने होटल संचालित करता है जबकि राहुल राजमिस्त्री का काम करता है।

तीनों में अच्छी दोस्ती होने के कारण रविन्द्र की होटल पर अक्सर उनकी महफिल जमा करती थी। इस महफिल में खास चर्चा राहुल की किसी नई प्रेमिका की होती थी। दरअसल राहुल के पास किसी भी लड़की को अपना दोस्त बना लेने की कला थी। इसलिए जवानी की शुरूआत से ही उसके कई प्रेम प्रसंग दोस्तों के बीच चर्चा में थे।

समय के साथ राहुल की प्रेमिकाओं की संख्या बढ़ती गई। साथ ही साथ तीनों की दोस्ती भी गहरी होती जा रही थी। इसी बीच कोई तीन साल पहले सपना नाम की एक शादीशुदा युवती अपने पति के साथ रविन्द्र के मकान में किरायेदार बनकर रहने आई। सपना काफी सुंदर, चंचल और मिलनसार स्वभाव की थी इसलिए जल्द ही उसकी रविन्द्र के घर में सबसे अच्छी बनने लगी। जिसके चलते वह रविन्द्र की मां को मां और उसकी पत्नी को भाभी कहकर बुलाने लगी। जिससे रविन्द्र और सपना के बीच बिन कहे ही मुंहबोले भाई-बहन का रिश्ता बन गया।

आरोपी योगेन्द्र।

आरोपी रविन्द्र।

मृतक के भाई ने की शव की पहचान।

मुंहबोली बहन से बनाए हुए था अवैध रिश्ता

आरोपी ने पुलिस को जो बताया उसके अनुसार राहुल ने रविन्द्र की मुंहबोली बहन के साथ अवैध संबंध बना रखे थे। जिसके चलते उसकी मुंहबोली बहन सपना का परिवार टूटने की कगार पर पहुंच गया था। रविन्द्र के अनुसार उसने राहुल को कई बार बहन से दूर रहने को कहा लेकिन वह हर बार बात को मजाक में टाल देता था। इसलिए जब पानी सिर से ऊपर होने लगा तो उसने राहुल की हत्या कर दी।

इसी बीच मोहल्ले के कुछ युवकों के द्वारा राहुल के कान में उसके दोस्त रविन्द्र की नई किरायेदारिन सपना की खूबसूरती की चर्चा पहुंची तो राहुल के मन का जिद्दी आशिक जाग उठा। उसने शाम को ही रविन्द्र से शिकायत करते हुए कहा यार ये बात ठीक नहीं कि तेरे घर में बड़ा शानदार माल रहने आया है और तूने अब तक मुझे नहीं बताया।

राहुल द्वारा सपना का माल कहकर बुलाना रविन्द्र को अच्छा नहीं लगा। इसलिए उसने राहुल को टोकते हुए कहा कि यार सांप भले की दुनिया में लहराकर चले पर अपने बिल में सीधा चलता है। इसलिए घर में यह नाटक मत कर वैसे भी वह मेरी बहन जैसी है।

देख भाई इस मामले में मेरा सीधा गणित है, बहन जैसी है तो रही आए, बहन तो नहीं है। इसलिए ज्यादा विना किसी हिचक के उसे अपना मोबाइल नंबर दे दिया तो राहुल समझ गया कि उसकी मंजिल ज्यादा दूर नहीं है।

राहुल का लक्ष्य ही सपना को पाना था इसलिए दूसरे दिन से ही राहुल सपना से फोन पर बात करने लगा। जिससे उनकी दोस्ती गहराने लगी और फिर एक दिन ऐसा भी आया जब राहुल ने सपना के सामने अपने प्रेम का इजहार कर दिया। सपना ने पहले तो पति का भरोसा तोड़कर राहुल के साथ इस राह पर चलने से मना किया लेकिन जब राहुल ने उसके सामने प्यार की पहाड़ भर कसमें खाई तो कुछ दिनों के बाद आखिर सपना ने उसका प्यार स्वीकार कर लिया। जिससे जल्द ही राहुल दुनिया वालों से छुपकर सपना से मुलाकातें करने लगा।

लेकिन एक ही मोहल्ले में एक दूसरे के पड़ोस में रहने वाली प्रेमी जोड़े की मोहब्बत दुनिया से कैसे छुप सकती थी। इसलिए चंद महीनों में ही मोहल्ले में राहुल और सपना के इश्क की चर्चा होने लगी तो एक रोज इस बात की खबर रविन्द्र तक भी पहुंच गई। रविन्द्र ने राहुल के सामने इसका विरोध किया तो राहुल बोला देख भाई मैंने सपना के साथ कोई जबरदस्ती तो की नहीं है आखिर उसने भी मेरा प्यार स्वीकार किया है तो फिर तुझे क्या दिक्कत है। रविन्द्र उसकी बात सुनकर चुप रह गया लेकिन उसे राहुल की यह हरकत पसंद नहीं आई।

घटना खुलासा करते एसपी तथा मृतक से बरामद सामान।

सीधा मत बन।

राहुल की इस बात पर रविन्द्र और राहुल में हल्की बहस भी हुई लेकिन मौके पर मौजूद योगेन्द्र ने मामला शांत करवा दिया। वास्तव में रविन्द्र के विरोध के बाद राहुल को सपना के बारे में सोचना बंद कर देना चाहिए था लेकिन उल्टे उसने ठान लिया कि सपना से दोस्ती तो वह करके ही रहेगा। रविन्द्र के घर में उसका पहले से आना जाना था इसलिए अपने फैसले के बाद उसने यह आना जाना और भी ज्यादा बढ़ा दिया। जिसके चलते जब उसने सपना को देखा तो उसकी सुंदरता देखकर अपना निशिचय और भी पक्का कर लिया।

पुलिस गिरफ्त में आरोपी और घटना में प्रयुक्त कार।

संयोग से इसी बीच एक रोज उसकी मुलाकात बाजार में सपना से हो गई। सपना भी राहुल को पहचानने लगी थी इसलिए राहुल ने उसे सड़क पर रोककर बात की तो सपना ने भी इस बात का बुरा नहीं माना। वैसे भी उसका मिलनसार स्वभाव तो था ही। राहुल पूरा मौकेवाज था सो उसने तुरंत ही सपना से उसका मोबाइल नंबर ले लिया। सपना ने बहरहाल इसके बाद भी तीनों दोस्तों की यारी में कोई फर्क नहीं आया। रविन्द्र ने विरोध करना बंद कर दिया तो राहुल खुद को और भी बढ़ा प्लेबॉय समझने लगा। इसलिए जब कभी तीनों दोस्तों की महफिल जमती तो शराब के नशे में कई बार राहुल अपनी आदत के अनुसार रविन्द्र और योगेन्द्र को सपना के साथ हुई एकांत मुलाकातों के किस्से सुनाने लगता तो कभी बातों-बातों में रविन्द्र को अपना साला कहकर बुलाने लगता। राहुल की इस हरकत से रविन्द्र के तन-मन में आग लग जाती।

इधर मोहल्ले में सपना और राहुल के नाम की चर्चा होने लगी थी तो दूसरी तरफ दोनों के बीच एक दूसरे के प्रति दीवानगी बढ़ती जा रही थी। इसका नतीजा यह निकला की एक रोज सपना के राहुल के साथ अवैध रिश्ते की जानकारी सपना के पति को हो गई। इस पर उसने सपना के साथ मारपीट करते हुए राहुल से दूर रहने को कहा साथ ही राहुल को भी हिदायत दी कि वो सीधा रास्ता चले।

शेष पृष्ठ 7 पर...

चर्चा में यह भी

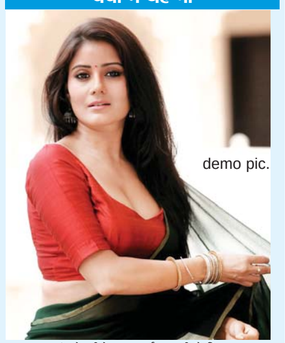

demo pic.

इस हत्याकांड के पीछे एक चर्चा यह भी है कि सपना के शिवपुरी छोड़कर जाने के बाद राहुल की नजर आरोपी की एक नजदीकी महिला पर जम गई थी। इसकी जानकारी आरोपी को लगने पर उसने राहुल को रास्ते से हटाने में ही भलाई समझी। अपितु पुलिस का कहना है कि जांच में ऐसी कोई बात सामने नहीं आई है।

रहस्य-रोमांच

रायसेन के किले की रहस्य कथा, यहां राजा ने खुद काट दिया था रानी का सिर

भारत में के ऐसे कई किले हैं, जो अपने आप में एक अनूठी कहानी समेटे हुए हैं। ये किले भारत की शान तो कहे ही जाते हैं, साथ ही साथ यहां की कुछ ऐसी रहस्यमय बातें भी हैं, जो लोगों को सोचने पर मजबूर कर देती हैं। एक ऐसा ही किला मध्य प्रदेश के रायसेन में है, जिसके बारे में कहा जाता है कि यहां शासन कर रहे राजा ने खुद अपनी रानी का सिर काट दिया था।

रहस्यमयी किला

सन् 1200 ईस्वी में निर्मित यह किला पहाड़ी की चोटी पर स्थित है। यह प्राचीन वास्तुकला और गुणवत्ता का एक अद्भुत प्रमाण है, जो कई शताब्दियां बीत जाने के बाद भी शान से उसी तरह खड़ा है, जैसा पहले था। 11वीं शताब्दी के आस-पास बने इस किले पर कुल 14 बार, 1223 ईस्वी में अल्तमश ने, 1250 ईस्वी में सुल्तान बलवन, 1283 ईस्वी में जलालउद्दीन खिलजी, 1305 ईस्वी में अलाउद्दीन खिलजी, 1315 ईस्वी में मलिक काफूर, 1322 ईस्वी में सुल्तान मोहम्मद शाह तुगलक, 1511 ईस्वी में साहिब खान, 1532 ईस्वी में हुमायू बादशाह, 1543 ईस्वी में शेरशाह सूरी, 1554 ईस्वी में सुल्तान बाजबहादुर, 1561 ईस्वी में अकबर, 1682 ईस्वी में औरंगजेब तथा 1754 ईस्वी में फैज मोहम्मद ने आक्रमण किए। लेकिन तोपों और गोलों की मार झेलने के बाद भी आज तक यह किला सीना तानकर खड़ा है।

रायसेन का किला 1500 फीट ऊंची पहाड़ी पर दस वर्ग किमी में फैला है। इतिहासकारों के अनुसार रायसेन किला का निर्माण एक हजार ईसा पूर्व किया गया है। बलुआ पत्थर से बने इस किले के चारों ओर बड़ी-बड़ी चट्टानों की दीवारें हैं। इन दीवारों के नौ द्वार और 13 बुर्ज हैं। इस किले का शानदार इतिहास रहा है। यहां कई राजाओं ने शासन किया है, जिनमें से एक शेरशाह सूरी भी था। हालांकि यह किला जीतने में उसके पसीने छूट गए थे। तारीखे शेरशाही के मुताबिक, चार महीने की घेराबंदी के बाद भी वो यह किला नहीं जीत पाया था।

कहते हैं कि शेरशाह सूरी ने इस किले को जीतने के लिए तांबे के सिक्कों को गलवाकर तोपें बनवाईं थी, जिसकी बदौलत ही उसे जीत नसीब हुई थी। हालांकि कहा जाता है कि 1543 ईस्वी में इसे जीतने के लिए शेरशाह ने धोखे का सहारा लिया था। उस समय इस किले पर राजा पूरनमल का शासन था। उन्हें जैसे ही ये पता चला कि उनके साथ धोखा हुआ है तो उन्होंने दुश्मनों से अपनी पत्नी रानी रत्नावली को बचाने के लिए उनका सिर खुद ही काट दिया था।

इस किले से जुड़ी एक बेहद ही रहस्यमय कहानी है। कहते हैं कि यहां के राजा राजसेन के पास पारस पत्थर था, जो लोहे को भी सोना बना सकता था। इस रहस्यमय पत्थर के लिए कई युद्ध भी हुए थे, लेकिन जब राजा राजसेन हार गए तो उन्होंने पारस पत्थर को किले में ही स्थित एक तालाब में फेंक दिया।

कहते हैं कि कई राजाओं ने इस किले को खुदवाकर पारस पत्थर को खोजने की कोशिश की, लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। आज भी लोग यहां रात के समय पारस पत्थर की तलाश में तांत्रिकों को अपने साथ लेकर जाते हैं, लेकिन उन्हें निराशा ही हाथ लगती है। इसको लेकर ये कहानी भी प्रचलित है कि यहां पत्थर को ढूंढ़ने आने वाले कई लोग अपना मानसिक संतुलन खो चुके हैं, क्योंकि पारस पत्थर की रक्षा एक जिन्न करता है।

हालांकि, पुरातत्व विभाग को अब तक ऐसा कोई भी सबूत नहीं मिला है, जिससे पता चले कि पारस पत्थर इसी किले में मौजूद है, लेकिन कही-सुनी कहानियों की वजह से लोग चोरी-छिपे पारस पत्थर की तलाश में इस किले में पहुंचते हैं।

इस किले के परिसर में ही एकभव्य प्राचीन मंदिर है, जो साल में केवल शिवरात्रि के दिन खुलता है। बाकी 364 दिन यह ताले में बंद रहता है। इस सोमेश्वर धाम मंदिर के प्रति आसपास के श्रद्धालुओं की आस्था है। यह मंदिर पुरातत्व विभाग के अधीन है। 1974 में नगर के लोगों ने एकजुट होकर मंदिर खोलने की मांग की थी। साथ ही यहां स्थित शिवलिंग की प्राण-प्रतिष्ठा के लिए आंदोलन किया था। उस समय तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रकाशचंद्र सेठी ने महाशिवरात्रि पर खुद आकर शिवलिंग की प्राण-प्रतिष्ठा कराई थी। तब से हर महाशिवरात्रि पर मंदिर का ताला श्रद्धालुओं के लिए खोला जाता है। इसके साथ ही विशाल मेला भी लगता है।

कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित।

13 हमले झेल चुका है किला

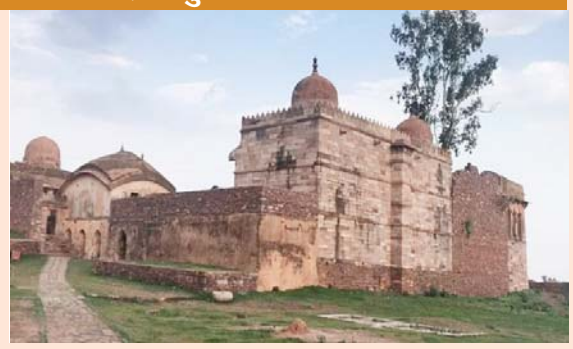

रायसेन का यह चमत्कारी और रहस्यमय किला अब तक 13 हमले झेलने के बाद भी शान से खड़ा है। इतिहासकारों के अनुसार 1223 ईस्वी में अल्तमश ने, 1250 ईस्वी में सुल्तान बलवन, 1283 ईस्वी में जलालउद्दीन खिलजी, 1305 ईस्वी में अलाउद्दीन खिलजी, 1315 ईस्वी में मलिक काफूर, 1322 ईस्वी में सुल्तान मोहम्मद शाह तुगलक, 1511 ईस्वी में साहिब खान, 1532 ईस्वी में हुमायू बादशाह, 1543 ईस्वी में शेरशाह सूरी, 1554 ईस्वी में सुल्तान बाजबहादुर, 1561 ईस्वी में अकबर, 1682 ईस्वी में औरंगजेब तथा 1754 ईस्वी में फैज मोहम्मद ने रायसेन किले पर आक्रमण किए।

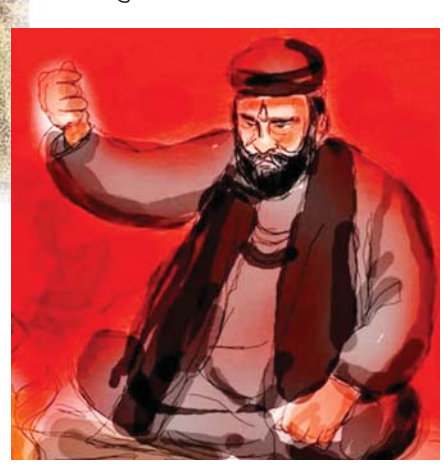

आज भी पारस पत्थर की तलाश में कई तांत्रिक पहुंचते है इस रहस्यमयी रायसेन किले में।

धोखे के शिकार हुए राजा पूरनमल

इस किले को जीतने के लिए 15वीं सदी में शेरशाह सूरी ने सिक्कों को गलवा कर तोपें बनवाई थीं। मालवा की पूर्वी सीमा पर स्थित इस किले को जीतने के लिए शेरशाह ने धोखे का सहारा लिया था। कहा जाता है कि तब राजा पूरनमल का राज इस किले पर था। इतिहासों में इस बात का उल्लेख मिलता है कि दिल्ली का शासक शेरशाह सूरी चार माह की घेराबंदी के बाद भी इस किले को नहीं जीत पाया था। इसके बाद उसने तांबे के सिक्कों को गलवा कर यहीं तोपों का निर्माण किया, तब कहीं जाकर शेरशाह को जीत नसीब हुई।

वाटर हार्वेस्टिंग और साउंड सिस्टम भी है खास

इस किले को लेकर कई किंवदंतियां हैं। इसकी चाहर दीवारी में हर साधन और भवन के कई हिस्से मौजूद हैं। इसके साथ ही यहां कुछ खास चीजें भी हैं, जो इसे अन्य किलों से अलग करती हैं। इन्हीं में से उस जमाने का वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम और इत्र दान महल का ईको साउंड सिस्टम है। यह सिस्टम देश के अन्य किलों में नहीं दिखती हैं। करीब दस वर्ग किमी में फैले इस किले की पहाड़ी पर गिरने वाला बारिश का पानी भूमिगत नालियों के जरिए किला परिसर में बने एक कुंड में जमा होता है। जानकारों का कहना है कि सदियों पुराने इस वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम से तत्कालीन शासकों की दूर दृष्टि और ज्ञान का अंदाजा लगाया जा सकता है। इसी तरह यहां बने इत्रदान महल के भीतर दीवारों पर बना ईको साउंड सिस्टम भी अनोखा है। एक दीवार के आले में मुंह डालकर फुसफुसाने से विपरीत दिशा की दीवार के आले में यह आवाज स्पष्ट सुनाई देती है। जबकि दोनों दीवारों के बीच 20 फीट की दूरी है। ये सिस्टम कैसे काम करता है, ये आज भी रिसर्च का विषय है।

कई जौहर और बलिदान जुड़े हैं किले से

17 जनवरी 1532 ईस्वी को बहादुर शाह ने रायसेन किले का घेराव किया। 6 मई 1532 ईस्वी को रायसेन की रानी दुर्गावती ने 700 राजपूतानियों के साथ जौहर किया। 10 मई 1532 ईस्वी को महाराज सिलहादी, लक्ष्मणसेन सहित राजपूत सेना का बलिदान। जून 1543 ईस्वी में रानी रत्नावली समेत कई राजपूत महिलाओं एवं बच्चों का बलिदान। जून 1543 ईस्वी में शेरशाह सूरी के विश्वासघाती हमले में राजा पूरणमल और सैनिकों का बलिदान।

...पृष्ठ 3 का शेष

मोना की बात सुनकर हंसते हुए बोली, पागल लड़की से शादी करने से क्या फायदा। क्या करेगी तू लड़की का? उसे अपनी पत्नी बनाकर रखूंगी।

चूंकि मोना-सोना सहेली जैसी थी इसलिए सोना ने खुले शब्दों में पूछा पत्नी बनाकर रखेगी तो उसे प्यार कैसे करेगी। जानती है लड़की को प्यार करने लड़के की जरूरत होती है।

जानती हूं लेकिन वह एक रात मेरे साथ रहेगी तो जिंदगी में कभी लड़के की तरफ नजर उठाकर नहीं देखेगी।

ऐसा क्या है तेरे पास? हंसते हुए सोना बोली तो मोना ने कहा एक बार मौका दो फिर बताती हूं। सच में मेरी नजर तो सालों से तेरे ऊपर है।

हट पागल कहीं की।

पागल नहीं यार भाभी एक बार मौका तो दो। फिर अगर तुम्हें लगे कि मैं किसी लड़की को खुश नहीं रख सकती तो तुम्हारे कहने से किसी भी लड़के के साथ शादी कर लूंगी। सोना को मोना की बातें अजीब लग रही थी उसने साफ मना कर दिया लेकिन उस रोज के बाद मोना अक्सर सोना से एक मौका देने की जिद करने लगी। इतना ही नहीं एक रोज जब सोना के घर में कोई नहीं था तब मोना ने उसे कमरे में पति की तरह पकड़ कर पलंग पर गिरा लिया और पागलों के जैसे उसे प्यार करने लगी। सोना ने थोड़ी देर तो उसका विरोध किया लेकिन न जाने मोना के प्यार में ऐसा क्या था कि कुछ ही देर बाद वह खुद मोना को सहयोग करने लगी। घंटे भर बाद जब मोना, सोना को छोड़कर पलंग से उठी तब सोना पसीना पसीना हो गई थी। उसने हांफते हुए मान लिया कि सचमुच तेरे साथ रहने के बाद कोई लड़की कभी भी किसी लड़कों की तरफ नहीं देखेंगी।

तो आज से अपनी दोस्ती पक्की, मोना ने हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा तो सोना ने अपना हाथ उसके हाथ में दे दिया। जिसके बाद सोना खुद मोना से अकेले में मिलने के मौके तलाशने लगी। लेकिन संयुक्त परिवार में उन दोनों को अकेले में मिलना आसन नहीं था इसलिए जब उन्होंने देखा कि घर में रहते हुए उनका प्यार यूं ही दम तोड़ देगा तो 1 अप्रैल की सुबह दोनों योजना बनाकर घर से भागकर जयपुर में पति पत्नी बनकर रहने लगी जहां से दस दिन बाद पुलिस ने उन्हें बरामद कर उनके परिवार को सौंप दिया।

कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित।

...पृष्ठ 6 का शेष

लेकिन न तो सपना मानने तैयार थी और न राहुल राजी था।

इसके चलते कुछ दिनों के बाद जब सपना के पति ने देखा की राहुल और सपना पाप से बाज नहीं आ रहे हैं तो एक रोज सपना के पति ने राहुल के घर जाकर हंगामा कर दिया। मोहल्ले में खूब तमाशा हुआ जिसके बाद सपना को

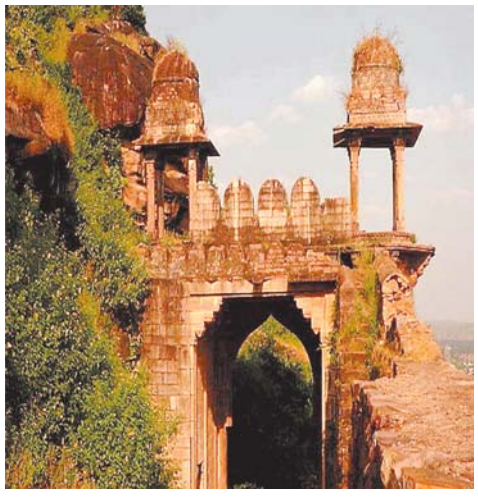

उसके मायके भेज दिया गया। लेकिन इसके बाद भी राहुल और सपना फोन पर एक दूसरे से इश्क लड़ाते रहे। इसकी जानकारी रविन्द्र को लगी तो उसने राहुल को फिर रोका कि वो उसकी बहन का घर तोड़ने से बाज आए लेकिन राहुल नहीं माना।

इसी बीच रविन्द्र ने अपने मकान में कुछ निमार्ण का कार्य शुरू किया तो राहुल को ही काम करने की जिम्मेदारी दी। राहुल उसके भरोसे` का आदमी था सो सुबह राहुल काम शुरू करता जिसके बाद रविन्द्र, राहुल को काम समझा कर अपनी होटल चला जाता था। इसी बीच एक रोज रविन्द्र दोपहर में काम देखने घर वापस आया तो उसने ठान लिया कि अब वह राहुल को जिंदा नहीं छोड़ेगा। इसके लिए उसने काफी सोच विचार के बाद योगेन्द्र को अपनी योजना बनाकर उससे इस काम में मदद मांगी तो योगेन्द्र तैयार हो गया।

इसी बीच राहुल की तबियत खराब हो जाने से वह दो तीन काम पर नहीं गया। जिसके बाद 27 तारीख को जब उसने रविन्द्र को बताया कि वह कल से काम करेगा तो रविन्द्र ने उसी रात राहुल का हिसाब करने की योजना बनाकर शाम के समय उसे फोन कर मजदूरी के पैसों का हिसाब करने घर बुलाया जहां योगेन्द्र पहले से मौजूद था। इसके बाद दोनों ने उसे पार्टी के लिए साथ चलने को कहा तो राहुल राजी हो गया। राहुल को मालूम था कि उसकी दादी काफी चिंता करती है इसलिए उसने दादी को फोन कर रात 11 बजे तक लौटकर आने की खबर दे दी।

इधर रविन्द्र, योगेन्द्र के साथ राहुल को अपनी कार में लेकर निकल पड़ा। दोनों अंधेरा होने के इंतजार में उसे शहर में यहां वहां घुमाते रहे उसके बाद अंधेरा होने पर वे राहुल को लेकर सतनबाड़ा, नरवर होते हुए सुजवाया पहुंचे जहां उन्होंने एक मैदान में बैठकर राहुल को चार बीयर की केन पिलाई जिससे जब राहुल को गहरा नशा हो गया तो योजना अनुसार रविन्द्र और योगेन्द्र ने उसके ऊपर चाकू से हमला करने के बाद सिर पर भारी पत्थर पटककर हत्या कर दी। हत्या करने के बाद दोनों ने लाश को कार में पटका और सतनबाड़ा से दो लीटर पेट्रोल लेकर वापस झांसी कोटा हाईवे पर सुजवाया के पास पहुंचे जहां एक पुलिया के नीचे लाश को रखकर उसे पेट्रोल की मदद से जलाने के पहले पहचान न हो इसलिए उसके कपड़े उतार दिए और लाश में आग लगाकर वापस आ गए।

शिवपुरी वापस आने पर रविन्द्र ने एक दोस्त की दुकान पर जाकर नए कपड़े खरीदे फिर दोनों मरघट की पुलिया पर आए जहां उन्होंने राहुल के साथ अपने खून सने कपड़े जलाकर नए कपड़े पहले और यहीं चाकू तथा राहुल का मोबाइल तोड़कर फेकने के बाद एक परिचित की शादी में शामिल होकर खूब नाचे ताकि जरूरत पढ़ने पर दोनों अपनी मौजूदगी शादी में दिखा सकें। लेकिन देहात पुलिस ने 24 घंटे में ही उनकी साजिश पर से पर्दा उठा दिया।

कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित।

परंपरा के नाम पर बेटी के जवान होते ही पिता बन जाता है ...

दरअसल बांग्लादेश के दक्षिण-पूर्व स्थित माधोपुर जंगल में रहने वाली आदिवासी कम्युनिटी 'मंडी' की एक अजीबोगरीब परम्परा है। जिसके मुताबिक अगर कोई पुरुष किसी विधवा महिला से शादी करता है तो उसे महिला की पहली शादी से जन्मी बच्ची से भी शादी करने की अनुमति मिल जाती है।

दुनिया में जितने अलग-अलग देश हैं उनकी कल्चर और रहन-सहन भी उतना ही अलग है। लेकिन कुछ प्रथा या रिवाज ऐसे होते हैं जिनके बारे में सुनते ही दिल झकजोर जाता है। सोचने पर मजबूर कर देता है कि आखिर ऐसा क्यों ही हो रहा है। ये नहीं होना चाहिए।

भारत के लगभग हर एक घर में बेटियां पिता की लाडली ही होती हैं। सख्त लहजे में पूरी जिंदगी बिताने वाला इंसान अपनी बेटी की विदाई में रो देता है। पिता के लिए बेटियों की नजरों में हमेशा सम्मान होता है।

लेकिन जरा सोचिए, जब पिता की शादी बेटी से होने वाली प्रथा के बारे में सुनने को मिलेगा तो कैसा लगेगा। हो सकता है कुछ लोगों को यकीन भी ना हो, लेकिन एक देश ऐसा है जहां इस तरह का रिवाज है।

दरअसल बांग्लादेश के दक्षिण-पूर्व स्थित माधोपुर जंगल में रहने वाली आदिवासी कम्युनिटी 'मंडी' की एक अजीबोगरीब परम्परा है। जिसके मुताबिक अगर कोई पुरुष किसी विधवा महिला से शादी करता है तो उसे महिला की पहली शादी से जन्मी बच्ची से भी शादी करने की

अनुमति मिल जाती है।

मतलब, मां और बेटी की शादी एक ही इंसान से हो सकती है। बचपन में जिसे बच्ची पिता मानती है उसे बड़े होकर पता चलता है कि यही उसका पति है। कई मामलों में इस रिवाज में विधवा महिला की शादी के साथ ही उसकी बच्ची की शादी भी उसी पुरुष से हो चुकी होती है।

मंडी जनजाति की यह परंपरा न सिर्फ

नैतिकता की सीमाओं को तोड़ती है बल्कि मासूम बच्चियों का मानसिक और भावनात्मक शोषण भी होता है, जो अपने बचपन में सिर्फ प्यार और सुरक्षा की उम्मीद करती हैं। जिस इंसान को बचपन से ही एक पिता के रूप में मानती आती हैं उसे ही बड़े होकर पति के तौर पर अपनाना पड़ता है। हालांकि कहा जाता है कि यह परंपरा अब खत्म हो चुकी है।

ओरोला डालबोट, इस रिवाज का हिस्सा बन चुकी हैं जिनकी कहानी दुनिया के सामने भी आ चुकी है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक ओरोला महज 3 साल की थीं जब मां के साथ उनकी शादी भी एक ही इंसान से कर दी गई थी। लेकिन बड़े होने पर जब उन्हें हकीकत पता चली तो शादी का सपना टूट गया। पिता को पति के रूप में देखना भी खौफनाक था। लेकिन शादी परिवार की जिंदगी के लिए जरूरी थी।

इस आदिवासी कम्युनिटी में महिलाओं की हुकूमत चलती है। उसके बाद इस तरह की परपंरा को माना जाता है। इस परपंरा को लेकर तर्क दिया जाता है कि हमें अपनों की प्रॉपर्टी भी बचानी है और महिलाओं को भी बचाना है। और, बेटी की पिता से शादी इसी व्यवस्था का हिस्सा है। हालांकि मॉडर्न लड़कियां इस रिचुअल को नहीं मान रहीं है।

(इस लेख में किए गए दावे इंटरनेट पर मिली जानकारी पर आधारित हैं। जागरण इसकी सत्यता और सटीकता जिम्मेदारी नहीं लेता है।)

बिजनौर

मामी के इश्क में भांजे ने ली मामा की जान

परदेशी सजन

सऊदी अरब कमाने गए शौहर की गैर मौजूदगी में जवानी की मांग से मजबूर बेगम ने पड़ोस में रहने वाले भांजे को अपनी वासना का साधन बना लिया था। लेकिन किसी दिल जले द्वारा बेगम की अय्याशी की खबर पाकर शौहर परदेश ने वापस लौट तो आया लेकिन बेगम ने अपने आशिक की मदद से उसे ठिकाने लगवा दिया।

शाम का अंधेरा घिरने पर बिजनौर के किरतपुर थाने की सीमा से लगे असगरपुर जंगल के किनारे खेतों में काम कर रहे किसान घर वापसी की तैयारी कर ही रहे थे कि अचानक जंगल से एक-एक कर तीन गोलियों की आवाज ने सबको चौंका दिया।

लोग इसकी चर्चा कर ही रहे थे कि थोड़ी देर बाद जंगल से दो युवक निकलकर अपनी मोटर साइकल से बिजनौर की तरफ भाग गए। कोई घंटा भर पहले यही दोनों युवक जंगल की तरफ गए थे लेकिन तब उनके साथ एक आदमी और था। यानी गए तीन थे और लौटे दो। तो क्या गोली उस तीसरे युवक को मारी गई है जो इनके साथ था। मामला संदिग्ध देख किसानों ने गोली चलने की जानकारी किरतपुर पुलिस को दे दी। जिससे पुलिस जंगल में पहुंची तो एक युवक का शव मिल गया जिसे दो गोलियां मारने के अलावा उसका चेहरा भी पत्थर से कुचल दिया गया था।

सीसीटीवी से हुई पहचान

आरोपियों ने मृतक को जंगल के अंदर गोली मारी थी लेकिन गोलियों की आवाज सुनकर किसानों ने इसकी जानकारी पुलिस को दे दी थी। किसानों ने तीन लोगों को मोटर साइकल पर आते और दो को वापस जाते देखा था। इसलिए पुलिस ने रास्ते में लगे सीसीटीवी कैमरों को खंगाला जिससे मोटर साइकल पर बैठे फारूख की पहचान हो गई थी।

दूसरे दिन शव की पहचान बिजनौर से बीस किलोमीटर दूर मोहल्ला ढोल कियान निवासी फारूख के रूप में होने पर जब पुलिस उसके घर पहुंची तो मालूम चला कि फारूख को कल शाम पड़ोस में रहने वाला उसका भांजा मेहरबान और मेहरबान का दोस्त उमर अपने साथ मोटर साइकल पर लेकर गए थे तभी से वो वापस नहीं आया।

मृतक फारूख।

पुलिस ने मेहरबान और उमर की घेरा बंदी की तो दोनों ने पुलिस के ऊपर गोली चला दी जिससे पुलिस ने भी गोली चलाई जो मेहरबान के पैर में लगी। जिसके बाद पुलिस ने दोनों को गिरफ्तार कर उनके पास से देशी तमंचा और मोटर साइकल बरामद कर ली। पूछताछ में मृतक फारूख की पत्नी शबनम (बदला नाम) का नाम सामने आने पर पुलिस ने शबनम को भी गिरफ्तार कर लिया। जिसके बाद यह कहानी इस प्रकार सामने आई।

शबनम और फारूख की शादी 7 साल पहले हुई थी। उनके दो बच्चे भी हैं। शादी के बाद फारूख पैसा कमाने सऊदी अरब चला गया तो यहां शबनम अकेली रह गई। शबनम के पड़ोस में ही फारूख का भांजा मेहरबान रहता था। जो मामा की गैर मौजूदगी में मामी के काम में उनकी मदद करता रहता था।

मेहरबान शादीशुदा था मगर उसकी बीवी लड़ झगड़ कर मायके में जाकर रहने लगी थी। इसलिए एक तरफ जहां 25 साल की शबनम शौहर की गैरमौजूदगी में शारीरिक सुख के लिए तरस रही थी वहीं मेहरबान भी पत्नी के न रहने से अपनी वासना से परेशान था। इसी बीच कोई पांच साल पहले एक रोज मेहरबान शबनम के घर गया तो उस समय शबनम कपड़े बदल रही थी। उसने मामी को इस रूप में देखा तो उसका खून उबलने लगा। उस रोज से मेहरबान की नजर शबनम के प्रति बदल गई। वह धीरे-धीरे उसके नजदीक आने की कोशिश करने लगा। मेहरबान की बदली निगाहों को शबनम पढ़ चुकी थी। वह खुद भी पुरुष संग के लिए तरस रही थी इसलिए मेहरबान का मन देखते हुए उसने भी अपनी तरफ से लगाम ढीली छोड़ दी।

आरोपी महिला शबनम।

मामी का इशारा मेहरबान समझ चुका था इसलिए एक रोज दोपहर में जब मामी के दोनों बच्चे बाहर गली में खेल रहे थे मेहरबान सीधे मामी के पास जा पहुंचा।

अरे आओ मेहरबान मैं तुम्हें ही याद कर रही थी। बड़ी उम्र है तुम्हारी।

अरे मामी काहे को बड़ी उम्र मी दुआ दे रही हो। यही तो कट नहीं रही।

क्यों नहीं कट रही।

बिना बेगम के जीना भी कोई जीना है।

कह तो तुम सच रहे हो। मगर मैं भी तो अकेले काट रही हूं।

आप तो कमाल करती है। इस उम्र में मामा साल में एक दो महीने का आते हैं। कैसे काटती है आप अपनी तनहाई?

आरोपी मेहरबान।

अंदर आओ बताती हूं। शबनम ने उसे अंदर के कमरे में आने का इशारा करते हुए कहा। आज्ञाकारी लड़के की तरह मेहरबान मामी के पीछे पीछे अंदर के कमरे में गया तो शबनम उससे लिपटते हुए बोली वक्त खराब मत करो बच्चे किसी भी समय वापस आ सकते हैं।

मेहरबान भी पीछे नहीं हटा उसने तुरंत ही मामी को बेपर्दा कर डाला और दोनों पाप के समंदर में उतर गए।

कहना नहीं होगा कि दोनों लंबे समय से वासना की आग में जल रहे थे इसलिए उस रोज मौका मिला तो उन्होंने कई बार पाप किया और फिर जल्द ही मिलने का वादा कर मेहरबान अपने घर चला गया।

मेहरबान रिश्ते में शबनम का भांजा लगता था इसलिए उसका पहले से ही शबनम के घर में आना जाना था इसलिए शारीरिक संबंध बना जाने के बाद मेहरबान और शबनम आए दिन एकांत में मिलने का मौका तलाशने लगे। जिसका असर यह हुआ कि वे एक दूसरे के दीवाने हो गए।

लेकिन ऐसी बातें छुपती नहीं है इसलिए जल्द ही मोहल्ले के लोगों को मामी-भांजे के इस पाप की जानकारी हो जाने से दोनों का इश्क चर्चा में रहने लगा। जिसके चलते मोहल्ले में रहने वाले फारूख के एक दोस्त ने इस बात की जानकारी फारूख को दे दी। जिससे फारूख ने शबनम को बच्चों को लेकर सऊदी आने के लिए कहा। शबनम तो मेहरबान को छोड़कर कहीं जाने की सोच भी नहीं सकती थी इसलिए उसने शौहर को सऊदी आने से मना कर दिया।

यह देखकर फारूख समझ गया कि आखिर शबनम भारत क्यों नहीं छोड़ना चाहती। इसलिए दो महीने बाद फारूख भारत आ गया। शबनम का सोचना था कि हमेशा की तरह एक ढेड महीने में फारूख वापस चला जाएगा। लेकिन फारूख अब वापस जाने के लिए नहीं आया था। वह बिजनौर में एक ट्रांसपोर्ट पर ड्राइवर की नौकरी करने लगा। यह देखकर मेहरबान और शबनम दोनों परेशान हो गए। लेकिन इस बीच फारूख जब गाड़ी लेकर बाहर जाता तो शबनम अपने आशिक को रात के अंधेरे में घर बुलाने लगी। लेकिन एक रात फारूख के बेटे से मेहरबान रात में अपनी अम्मी के साथ सोता देखकर इसकी जानकारी पिता को दे दी। जिससे फारूख ने पत्नी की बुरी तरह पिटाई कर दी और मेहरबान को अपने घर आने से साफ मना कर दिया।

लेकिन अवैध रिश्तों का चस्का जिसे लग जाए वह जल्दी नहीं छूटता। इसलिए पति के मना करने के बाद भी शबनम घर से बाहर जाकर मेहरबान से मिलने लगी। इसकी जानकारी लगने पर फारूख ने शबनम के घर से बाहर जाने पर रोक लगा दी। इससे शबनम विद्रोही हो गई वह मेहरबान के संग रहने की बात करने लगी। जिससे आए दिन फारूख उसकी पिटाई करने लगा। इसी बीच एक रोज मौका निकालकर शबनम अपने आशिक से मिली और उसने फारूख को हमेशा के लिए रास्ते से हटाने का कहते हुए तमंचा खरीदने के लिए प्रेमी का अपनी सोने की अंगूठी दे दी।

आरोपी महिला शबनम।

मेहरबान ने अंगूठी बेचकर तमंचा खरीदकर अपने दोस्त उमर को संग देने के लिए राजी कर लिया। जिसके बाद 28 अप्रैल को दोनों पार्टी के लिए फारूख को असगरपुर के जंगल में ले गए जहां शराब पिलाने के बाद उन्होंने उसकी पीठ में दो गोलियां मारकर उसकी हत्या करने के बाद मौके से ही शबनम को फोन लगाकर काम हो जाने की खबर दी और फिर अपने घर वापस आ गए। लेकिन पुलिस ने अगले की दिन सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया।

कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित।

तमंचा खरीदने बेगम ने दी अंगूठी

मेहरबान ने बताया कि मामू की हत्या करने के लिए हथियार खरीदने उसके पास पैसे नहीं थे। इसलिए मामी ने अपनी सोने की अंगूठी उसे दी थी जिसे बेचकर उसने तमंचा खरीदा था। मेहरबान ने यह भी बताया कि पहली गोली उसने चलाई थी मगर वह निशाने पर नहीं लगी जिसके बाद उमर से दो गोलियां मामू की पीठ में मारी थी। लाश पहचान में न आए इसलिए उन्होंने पत्थर से उसका चेहरा कुचल दिया था।

शौहर को छोड़कर भांजे के साथ रहना चाहती थी मामी

जांच में सामने आया है कि शबनम पति को छोड़कर भांजे के साथ रहने की जिद कर रही थी। इस बात पर शौहर आए दिन उसके साथ मारपीट करता था। इसलिए शबनम ने शौहर को ही रास्ते से हटाने का फैसला कर लिया था।